सितंबर 2021

₹ 20

समाजवादी बुलेटिन

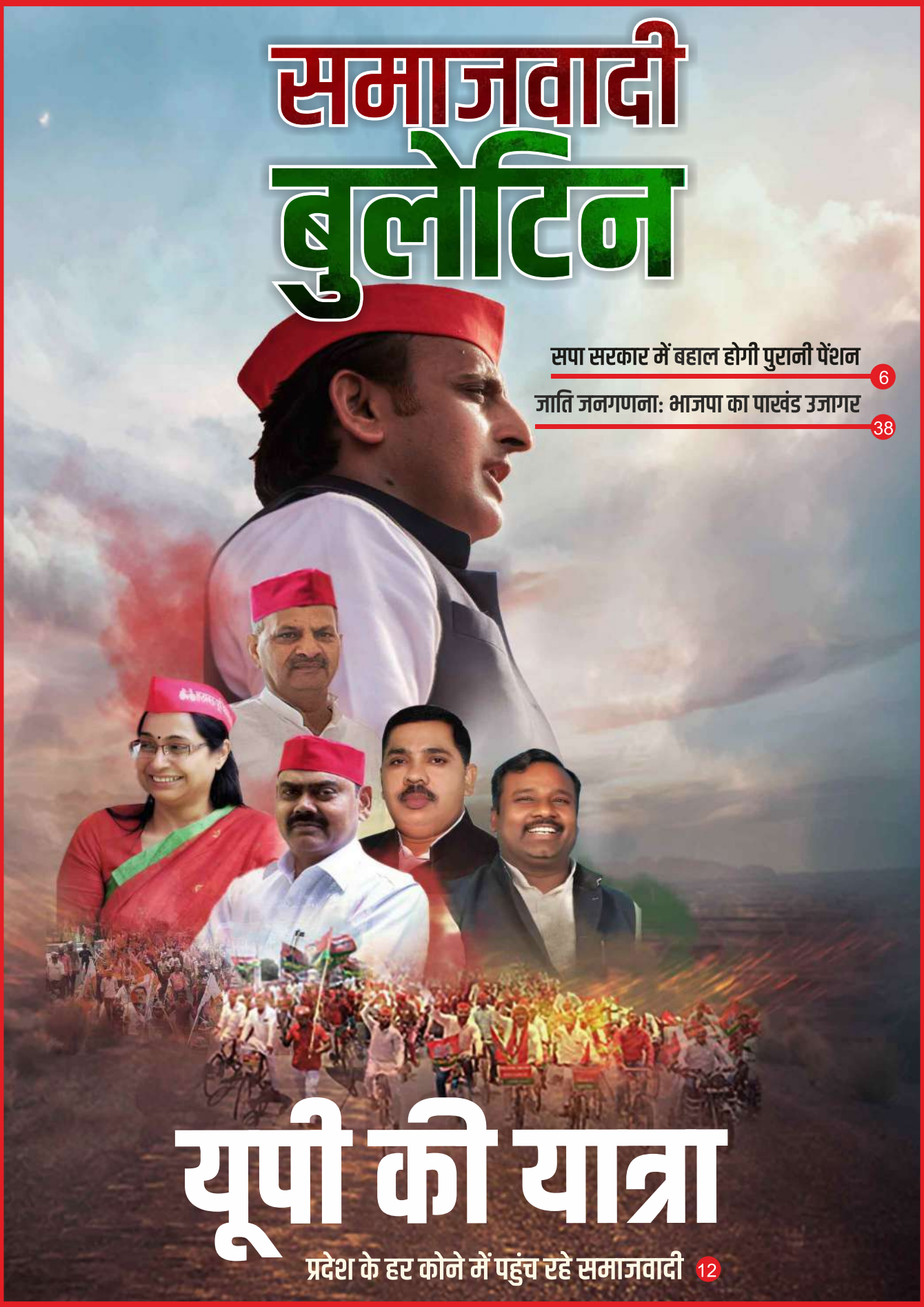

सपा सरकार में बहाल होगी पुरानी पेंशन 6

जाति जनगणना: भाजपा का पाखंड उजागर 38

यूपी की यात्रा

प्रदेश के हर कोने में पहुंच रहे समाजवादी 12

R.N.I. No. 68832/97

समाजवादी आंदोलन भेदभाव मिटाने के लिए है। समाजवादी पार्टी को यह दायित्व निभाते रहना है। हमें महिलाओं, युवाओं, गरीबों और किसानों की बेहतरी के लिए काम करना होगा। सभी वर्गों ने समाजवादी पार्टी का साथ दिया है। हमें सभी को साथ लेकर चलना है।

मुलायम सिंह यादव
संस्थापक-संरक्षक, समाजवादी पार्टी

समाजवादी बुलेटिन

सितंबर 2021
वर्ष 22 | संख्या 11

प्रिय पाठकों,
समाजवादी बुलेटिन आपकी अपनी पत्रिका है। इसके नए और बदले कलेवर को आप सबने सराहा है। आपका यह उत्साह वर्धन हमारी ऊर्जा है। कृपया अपनी राय से हमें अवगत कराते रहें। इसके लिए आप हमें नीचे दिए गए ईमेल पर लिख सकते हैं। कृपया अपना पूरा नाम, पता एवं मोबाइल नंबर जरूर दें। हम बुलेटिन को और बेहतर बनाने का प्रयास जारी रखेंगे। आपके संदेश की प्रतीक्षा रहेगी।
धन्यवाद

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक
प्रोफेसर रामगोपाल यादव
☎ 0522 - 2235454
samajwadibulletin19@gmail.com
bulletinsamajwadi@gmail.com
Mob:- 9598909095
/samajwadiparty

समाजवादी पार्टी के लिए
19, विक्रमादित्य मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित
अवध पब्लिशिंग हाउस, 8 पान दरीबा, लखनऊ से मुद्रित

R.N.I. No. 68832/97

अंदर

"आरक्षण से खिलवाड़ कर रही भाजपा" 41

12 कवर स्टोरी

यूपी की यात्रा

यात्राएं जोड़ती हैं और समाजवादी पार्टी इन दिनों उत्तर प्रदेश में अलग-अलग यात्राओं के जरिए समाज के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने के काम में शिद्दत से जुटी है। सभी मंडलों एवं जनपदों में समाजवादियों की यात्राएं पहुंच रही हैं और उन्हें लोगों का भारी समर्थन मिल रहा है।

सामयिकी 45

सपा में शामिल होने का सिलसिला जारी

सपा सरकार में बहाल होगी पुरानी पेंशन 06
जाति जनगणना: भाजपा का पाखंड उजागर 38

समाजवादियों की प्रेरणा हैं आजम साहब

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी का संघर्षमय इतिहास रहा है और पार्टी के तमाम नेताओं ने अपने संघर्ष एवं जज्बे से नौजवान समाजवादियों को प्रेरित करने का काम किया है। समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य, पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं रामपुर के सांसद आजम खान साहब भी संघर्ष की इस शानदार समाजवादी विरासत की मिसाल हैं। बीते दो साल से तमाम प्रतिकूल हालातों में भी हौसला न गंवाने के आजम खान साहब के व्यक्तित्व से समाजवादियों को खासी प्रेरणा मिल रही है।

यही कारण है कि भाजपा सरकार द्वारा आजम साहब एवं उनके परिवार के सदस्यों के खिलाफ लादे गए मनमाने मुकदमों के खिलाफ प्रदेश भर में समाजवादी निरंतर मुखर रहे हैं। प्रत्येक समाजवादी को अदालतों पर पूर्ण भरोसा है एवं पूरी उम्मीद कि आजम साहब आरोपों से बरी होकर ससम्मान रिहा होंगे क्योंकि भाजपा सरकार अपने आचरण से लोकतांत्रिक मान्यताओं और विपक्ष के प्रति सम्मान भावना की अवहेलना कर अनैतिक आचरण कर रही है।

उल्लेखनीय है कि आजम साहब ने दशकों लोकतंत्र के लिए संघर्ष किया है।

'जौहर विवि के सम्मान में' के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 'जौहर विश्वविद्यालय के सम्मान में' समाजवादी साइकिल यात्रा के प्रतिभागियों को 14 सितंबर को सपा मुख्यालय के डा॰ राम मनोहर लोहिया सभागार, लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में प्रमाण-पत्र प्रदान किये।

विगत 13 मार्च 2021 रामपुर से प्रारम्भ साइकिल यात्रा का समापन 21 मार्च 2021 को लखनऊ में हुआ था। स्वयं श्री अखिलेश यादव ने रामपुर में साइकिल चलाकर यात्रा की शुरुआत की थी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने नौजवानों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि उनकी साइकिल यात्रा से समाजवादी पार्टी के पक्ष में माहौल बना है और जनता के बीच इन यात्री नौजवानों ने समाजवादी पार्टी की नीतियों एवं समाजवादी सरकार की उपलब्धियों को भी पहुंचाने का सराहनीय काम किया है।

इस यात्रा के प्रभारी श्री मोहम्मद फहीम इरफान विधायक एवं सहप्रभारी श्री जयवीर सिंह थे। साइकिल यात्रा कार्यक्रम में 231 नौजवानों ने भाग लिया।

आपातकाल में दो वर्ष तक उन्होंने जेल की यातना सही। वे 9 बार विधायक, 5 बार मंत्री और एक बार राज्यसभा सदस्य रह चुके हैं। इस समय वह लोकसभा के सदस्य हैं। उन्होंने तालीम के क्षेत्र में मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय रामपुर में स्थापित कर ऐतिहासिक काम किया।

समाजवादी पार्टी की सरकार में उन्होंने इलाहाबाद कुम्भ के आयोजन को सफलतापूर्वक पूरी जिम्मेदारी से निभाया जिसकी प्रशंसा विदेशों तक में हुई थी। कुम्भ मेले में आए अखाड़ो के साधु-संतों ने भी आजम साहब के कार्यों की प्रशंसा की थी। उनकी उपलब्धियों की लंबी फेहरिस्त है।

ऐसी शख्सियत के खिलाफ सत्तारूढ़ पार्टी के कहने पर पुलिस-प्रशासन द्वारा की जा रही मनमानी कार्रवाई के खिलाफ समाजवादी पार्टी लगातार मुखर रही है। खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने उनकी गिरफ्तारी के मुद्दे पर लगातार सरकार को घेरा है। श्री अखिलेश यादव ने आजम साहब की रिहाई की मांग करते हुए रामपुर से लखनऊ तक चली साइकिल यात्रा की रामपुर में साइकिल चलाकर शुरुआत भी की थी। श्री अखिलेश यादव ने हमेशा कहा है कि समाजवादी पार्टी हर दुःख दर्द में उनके साथ खड़ी रहेगी।

समाजवादी सरकार में बहाल होगी पुरानी पेंशन

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि समाजवादी सरकार बनने पर किसानों- बुनकरों को बिजली की सुविधा मिलेगी और नौजवानों

के रोजगार का इंतजाम होगा, पुरानी पेंशन को भी बहाल करेंगे। साथ ही शिक्षकों की प्रमुख मांगें भी पूरी की जाएंगी।

श्री अखिलेश यादव 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के अवसर पर भदोही में आयोजित समाजवादी शिक्षक सभा के सम्मेलन एवं शिक्षक सम्मान समारोह कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता समाजवादी शिक्षक सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो बी.पाण्डेय ने की।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में लाखों किसान भाजपा के खिलाफ हुंकार भर रहे हैं तो भदोही में शिक्षक, बुनकर, नौजवान बहुत बड़ी तादाद में एकत्र हैं। यह परिवर्तन की आवाजे हैं जो उठ रही है। भाजपा का सत्ता से बेदखल होना तय है। समाजवादी पार्टी की सन् 2022 के चुनावों में बहुमत से जीत होगी।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा सरकार से किसान-नौजवान-शिक्षक हर वर्ग नाराज हैं। श्री यादव ने कहा कि जरूरत पर शिक्षकों की इस सरकार ने मदद नहीं की। उनकी मदद सिर्फ समाजवादी सरकार ने ही की थी।हमने छात्र-छात्राओं को लैपटॉप बांटा था ताकि उनका भविष्य बेहतर बने।

उन्होंने कहा कि कोरोना के समय सरकार ने जनता को अनाथ छोड़ दिया। लोगों को खुद दवा, आक्सीजन का इंतजाम करना पड़ा। अस्पतालों में बेड नहीं मिला। आक्सीजन की कमी से बड़ी संख्या में लोग मौत के मुंह में चले गये। इसके लिए भाजपा सरकार जिम्मेदार है। कोरोना काल में जो हालत रही उससे देश का पूरी दुनिया में अपमान हुआ। कोरोना के समय समाजवादी सरकार में बनाये गये अस्पताल ही काम आए।

श्री यादव ने कहा कि आज किसानों का अधिकार छीना जा रहा है। नए कृषि कानून लागू होने के बाद किसानों की खेती छिन जाएगी और खेती खत्म हो जाएगी। भाजपा ने सरकार में आने पर किसानों की आय दोगुना करने का वादा किया था लेकिन किसान की आय दोगुनी होने की जगह कम हो गई। डीजल, पेट्रोल की कीमतें बढ़ गईं। महंगाई दोगुनी हो गयी। रसोई गैस सिलेण्डर के दाम बढ़ गये हैं। भाजपा सरकार ने प्रदेश में एक यूनिट नयी बिजली नहीं बनायी। लेकिन बिजली का बिल मंहगा हो गया।

लोग सपने बुनेंगे
और भदोही
बुनेगा बुलंदी

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि इस सरकार ने विकास को रोक दिया है। भदोही में कार्पेट मार्ट समाजवादी सरकार में बना। बुनकर आज सबसे ज्यादा परेशान है। मुख्यमंत्री ने केवल शिलान्यास का शिलान्यास और उद्घाटन का उद्घाटन किया है। मुख्यमंत्री ने अपने पूरे कार्यकाल में एक भी अस्पताल ऐसा नहीं है जिसका शिलान्यास और उद्घाटन दोनों किया हो। भाजपा सरकार राष्ट्र की संपत्ति बेच रही है। सरकार की नीति ऐसी है, जिसके पास पैसा हो वह रेल, एयरपोर्ट, बीमा, बैंक, पोर्ट, सब खरीद सकता है। मंहगाई, बेरोजगारी बढ़ गयी है। लोगों की जेब में पैसा नहीं है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि आज सब जान गए हैं कि भाजपा ने उन्हें धोखा दिया है। अपना कोई संकल्प भाजपा ने पूरा नहीं किया। 42 प्रतिशत वोट के दावेदारी करने वाले अब बंद कमरों में प्रबुद्ध सम्मेलन कर रहे हैं। भाजपा चुनाव हारने जा रही है। जनता ने तय कर लिया है कि वह इस बार भाजपा का सफाया कर देगी।

यूपी की यात्रा

दुष्यंत कबीर

यात्राएं जोड़ती हैं और समाजवादी पार्टी इन दिनों उत्तर प्रदेश में अलग-अलग यात्राओं के जरिए समाज के विभिन्न हिस्सों को जोड़ने के काम में शिद्दत से जुटी है। सभी मंडलों एवं जनपदों में समाजवादियों की यात्राएं पहुंची उन्हें लोगों का भारी समर्थन मिला।

यात्राएं एवं दौरे जनसंपर्क करने के आजमाए हुए तरीके रहे हैं। 2022 में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले समाजवादी पार्टी की बातों को लोगों तक पहुंचाने के लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने यात्राओं के आयोजन को अभिनव रूप दिया है। इसके तहत किसी एक यात्रा के संचालन के बजाय एकाधिक यात्राएं एक साथ प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में शुरू की गईं। इनका नेतृत्व अलग-अलग नेताओं ने किया।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सपा की इन यात्राओं से उत्तर प्रदेश में सत्ता परिवर्तन का संदेश गया है। जिन-जिन जनपदों से ये यात्राएं निकली हैं, वहां भाजपा का सफाया तय है। 2022 में भाजपा को ये यात्राएं हटाकर ही दम लेंगी।

समाज के अलग-अलग तबकों के बीच श्री अखिलेश यादव एवं समाजवादी पार्टी का संदेश पहुंचाने के उद्देश्य से चलीं इन यात्राओं के प्रति इलाकाई लोगों के बीच खासा उत्साह देखा गया। यात्राओं का नेतृत्व कर रहे नेताओं ने लोगों के बीच यह संदेश पहुंचाया कि कैसे सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के राज में समाज का हर तबका त्रस्त है। इन यात्राओं को आम लोगों का खासा समर्थन मिल रहा है एवं लोग इसकी चर्चा कर रहे हैं कि कैसे श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व वाली समाजवादी सरकार में समाज के हर वर्ग के प्रति समान दृष्टिकोण के तहत काम किया जाता था।

समाजवादी पार्टी की जिन प्रमुख यात्राओं ने जनता के बीच पहुंच कर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव का संदेश पहुंचाया उनमें पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री इन्द्रजीत सरोज के नेतृत्व में 1 सितंबर 2021 को पीलीभीत से शुरू हुई 'जनादेश यात्रा', समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल के नेतृत्व में 29 अगस्त से शुरू हुई खेत खलिहान बचाओ, रोजगार दो, किसान नौजवान, पटेल यात्रा, समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती जूही सिंह के नेतृत्व में जन संवाद यात्रा प्रमुख हैं।

2022 में होने वाले यूपी विधानसभा चुनाव से पहले समाजवादी पार्टी की बातों को लोगों तक पहुंचाने के लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने यात्राओं के आयोजन को अभिनव रूप दिया है

इनके अलावा समाजवादी पार्टी के सहयोगी दल महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य के नेतृत्व में 16 अगस्त 2021 को पीलीभीत से शुरू होकर 26 अगस्त को सैफई में संपन्न हुई जनाक्रोश यात्रा, सपा के एक और सहयोगी दल जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के संस्थापक डॉ संजय सिंह चौहान के नेतृत्व में बलिया से 16 अगस्त को शुरू होकर 2 सितंबर को लखनऊ में संपन्न हुई 'भाजपा हटाओ, प्रदेश बचाओ जनवादी क्रांति यात्रा, समाजवादी अधिवक्ता सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार एडवोकेट के नेतृत्व में 31 अगस्त को लखनऊ से शुरू "संविधान बचाओ-संकल्प यात्रा", समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष राजपाल कश्यप के नेतृत्व में चल रही यात्रा एवं पूर्व मंत्री श्री राम किशोर बिंद के नेतृत्व में चली समाजवादी जन चौपाल बिंद, निषाद, केवट, मल्लाह यात्रा का भी खासा असर रहा।

जनक्रांति यात्रा
जनता ने किया मुखर समर्थन

बुलेटिन ब्यूरो

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. संजय सिंह चौहान के नेतृत्व में 'भाजपा हटाओ, प्रदेश बचाओ' जनवादी जनक्रांति यात्रा के पहले चरण का समापन 2 सितंबर लखनऊ में समाजवादी पार्टी के कार्यालय पर हुआ। यात्रा का इन दिनों दूसरा चरण चल रहा है।

पहले चरण के समापन के अवसर पर आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी थे जबकि समाजवादी पार्टी के संस्थापक-संरक्षक नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव जी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

नेताजी ने समारोह में जुटी भारी भीड़ पर खुशी जताते हुए सभी को धन्यवाद दिया और भाजपा को सत्ता से हटाने और समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय की लड़ाई सपा ही लड़ सकती है और यह खुशी की बात है कि पार्टी के साथ बड़ी संख्या में युवा जुड़े हैं।

जनक्रांति यात्रा को 16 अगस्त 2021 को बलिया से नेता विरोधी दल विधानसभा श्री

जन क्रांति यात्रा

रामगोविन्द चौधरी ने झंडी दिखाकर रवाना किया था। यह यात्रा बलिया से मऊ, गाजीपुर, वाराणसी, सोनभद्र, मिर्जापुर, भदोही, प्रयागराज, आजमगढ़, अम्बेडकरनगर, अयोध्या और बाराबंकी होते हुए लखनऊ पहुंची।

जिन जनपदों से यात्रा गुजरी वहां उमड़ी भारी भीड़ भाजपा सरकार के प्रति जनाक्रोश का मुखर प्रदर्शन साबित हुई। इस यात्रा का जगह-जगह जनता ने स्वतः स्फूर्त ढंग से स्वागत किया और हर जगह यह संकल्प दुहराया गया कि 2022 में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाई जाएगी।

लखनऊ में समापन समारोह को संबोधित करते हुए श्री अखिलेश यादव ने कहा कि जनता में भाजपा के प्रति बहुत गुस्सा है। वह एक दिन भी भाजपा को सत्ता में नहीं देखना चाहती है। चारों ओर भाजपा हटाओ का शोर है। समाज का हर वर्ग परेशान है। भाजपा का सफाया तय है। इसलिए इस बार 400 पार का नारा सामयिक है।

श्री अखिलेश यादव ने कहा कि सपा की इन यात्राओं से उत्तर प्रदेश में सत्ता परिवर्तन का संदेश गया है। जिन-जिन जनपदों से ये यात्राएं निकली है, वहां भाजपा का सफाया तय है। सन् 2022 में भाजपा को ये यात्राएं हटाकर ही दम लेंगी।

श्री यादव ने कहा कि भाजपा ने किसानों को धोखा दिया है। उनकी आय दोगुनी करने का वादा पूरा नहीं हुआ, महंगाई जरूर दोगुनी हो गई है। भ्रष्टाचार पर कहीं रोक नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा ने जो नहीं दिया जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) नेताओं, कार्यकर्ताओं को समाजवादी पार्टी पूरा सम्मान देगी। समाजवादी पार्टी सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध है।

जनवादी पार्टी (सोशलिस्ट) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ संजय सिंह चौहान ने कहा कि उनकी जनवादी जनक्रांति यात्रा पूर्वांचल के डेढ़ दर्जन जिलों में गई है। चौहान समाज अब पूरी तरह सपा के साथ है। वह किसी भी तरह भाजपा से गुमराह नहीं होगा। हम सब विधानसभा चुनावों में सपा को जिताएंगे और 2022 में श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाएंगे।

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के सहयोगी दल महान दल की 16 अगस्त 2021 को पीलीभीत से शुरू हुई जनाक्रोश यात्रा का समापन 26 अगस्त को सैफई, इटावा में हुआ। समापन समारोह को सम्बोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव, सांसद प्रो रामगोपाल यादव ने कहा कि प्रदेश में अत्याचार और अन्याय की पराकाष्ठा हो गयी है। उत्तर प्रदेश सरकार अन्याय की पर्याय बन गयी है।

उन्होंने कहा कि किसान, बेरोजगार, नौजवान, महिलाएं अपना हक मांगती है तो लाठीचार्ज होता है। कदम-कदम पर अन्याय हो रहा है। ऐसी स्थिति में सरकार को हटाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं अन्यथा देश भुखमरी के कगार पर पहुंच जाएगा। प्रदेश में लाखों लोग कोरोना से मरे लेकिन सरकार ने छुपा लिया। इतनी जुल्मी सरकार को हटाना ही पड़ेगा।

प्रो रामगोपाल यादव ने कहा कि देश में सब कुछ बेचा जा रहा है। सड़कों को भी बेचा जा रहा है। यह मामूली बात नहीं है। रेल बेची जा

जनाक्रोश यात्रा
मिला जन का साथ

रही है। कुछ दिनों में सब निजी हाथों में चला जाएगा। देश की सारी संपत्ति चार-पांच लोगों के हाथ में दी जा रही है। निजी हाथों में जाने के बाद आरक्षण खत्म हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि महान दल ने समाजवादी पार्टी को मजबूती प्रदान करने के लिए श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने का निश्चय किया, इसका स्वागत है। इसके लिए धन्यवाद। महान दल के कार्यकर्ताओं को अपना पुराना इतिहास याद रखना होगा। उन्हें मिटाने का काम किया गया।

इस अवसर पर महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री केशव देव मौर्य ने कहा कि सैफई की धरती हमारे लिए तीर्थ स्थल से कम नहीं है। महान दल और समाजवादी पार्टी का रिश्ता कुर्सी और स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि दलित, पिछड़ों, गरीबों के मान-सम्मान को बचाने और संविधान की रक्षा के लिए है।

श्री मौर्य ने कहा कि आज लोकतंत्र की हत्या हो रही है। संविधान जलाया जा रहा है। भाजपा चुप है। भाजपा जनता के साथ अत्याचार कर रही है। कोरोना काल में जनता के साथ अन्याय हुआ है। जनता यह अन्याय अत्याचार भूल नहीं सकती। पेट्रोल-डीजल की कीमतें आसमान छू रही है। भाजपा संविधान और दलित, पिछड़ों का अस्तित्व समाप्त कर रही है। श्री मौर्य ने कहा कि महान दल के कार्यकर्ता समाजवादी पार्टी गठबंधन के हर प्रत्याशी को जिताकर सपा की सरकार बनाने का काम करेंगे।

इस मौके पर मौजूद बदायूं के पूर्व सांसद श्री धर्मेन्द्र यादव ने कहा कि महान दल के साथ समाजवादी पार्टी का गठबंधन दिलों का गठबंधन है। महान दल पूरी भावना के साथ गठबंधन के साथ काम कर रही है। श्री यादव ने कहा कि भाजपा ने पिछड़ों को ठगने का काम किया है। सपा सरकार बनने पर फिर से जनता के हित के कार्य शुरू किए जाएंगे।

कार्यक्रम में पूर्व सांसद श्री तेज प्रताप यादव एवं राम सिंह शाक्य, जिला पंचायत अध्यक्ष इटावा श्री अंशुल यादव, महान दल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सुमन शाक्य, महान दल के प्रदेश अध्यक्ष शिव कुमार यादव समेत दोनों दलों के तमाम पदाधिकारी एवं सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

किसान-नौजवान यात्रा दिखा रही असर

बुलेटिन ब्यूरो

बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी तथा किसान-मजदूर, बुनकर, कुटीर उद्योग के प्रति भाजपा सरकार की उदासीनता के खिलाफ समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के नेतृत्व में 29 अगस्त को शुरू हुई किसान नौजवान, पटेल यात्रा जहां भी पहुंच रही है वहां भारी भीड़ जुट रही है। यात्रा के तहत सभाओं, विचार गोष्ठियों के जरिए किसानों, नौजवानों और मजदूरों को भाजपा सरकार की जन विरोधी नीतियों, शोषण, अन्याय और अत्याचार की जानकारी देते हुए और भाजपा के झूठ का पर्दाफाश किया जा रहा है।

इस यात्रा के द्वारा समाजवादी पार्टी प्रदेश में खासकर किसानों, मजदूरों और नौजवानों

को एकजुट कर रही है। सपा प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल के नेतृत्व में तीन दर्जन से अधिक जिलों से गुजरने वाली यात्रा 7 चरणों में अक्टूबर 2021 तक जारी रहेगी। यात्रा का हर जगह हजारों कार्यकर्ताओं और नेताओं ने भव्य स्वागत किया। यात्रा का जगह-जगह स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम हुआ।

यात्रा के महत्व का उल्लेख करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में किसान-मजदूर-नौजवानों का सबसे अधिक योगदान रहा है। अंग्रेजी सरकार की दमनकारी और शोषणकारी नीतियों के खिलाफ किसानों ने देशव्यापी आंदोलन चलाया था।

उन्होंने कहा कि लौह पुरूष सरदार बल्लभ भाई पटेल द्वारा किया गया खेड़ा किसान आंदोलन, बारदोली किसान आंदोलन, चम्पारन का किसान आंदोलन, नुनारा फतेहपुर किसान आंदोलन महत्वपूर्ण साबित हुए। रायबरेली में 1921 में किसानों के बलिदान जैसे अनेको उदाहरण हैं। देश की आजादी के लिए किसानों द्वारा किये गये संघर्ष एवं बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता है। देश में सबसे ज्यादा परिश्रमी, ईमानदार, हमारे किसान-मजदूर-बुनकर हैं। लेकिन मौजूदा भारतीय जनता पार्टी की सरकार इन्हीं के साथ जुल्म, अन्याय और अत्याचार कर रही है।

यात्रा के तीसरे चरण के आखिरी दिन 22 सितंबर को रायबरेली में किसानों-नौजवानों ने गर्मजोशी के साथ हजारों की संख्या में सड़कों पर निकल कर स्वागत किया। सदर विधानसभा में जनसभा को संबोधित करते हुए प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम ने कहा आज देश बदहाली का जीवन व्यतीत कर रहा है। महंगाई आसमान छू रही है। डबल इंजन की सरकार हर मोर्चे पर फेल है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस और भाजपा में कोई अंतर नहीं है। इस भ्रष्टाचारी सरकार को जड़ से खत्म करने के लिए सबको एकजुटता से सिर्फ अखिलेश यादव के नाम पर साइकिल निशान पर वोट देकर 2022 में श्री

समाजवादी पार्टी

अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने का संकल्प लेना हगा। भाजपा को सत्ता से हटाया नहीं गया तो वह देश की गरीब जनता को कटोरा पकड़ा देगी। श्री पटेल ने कहा कि प्रदेश में परिवर्तन की हवा चल रही है। जनता बदलाव चाहती है। प्रदेश में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में प्रचंड बहुमत की सरकार बनेगी।

इससे पहले 29 अगस्त को सीतापुर जिले के महमूदाबाद सीतापुर से यात्रा का पहला चरण शुरू हुआ था जो बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर, गोण्डा आदि जनपदों में गई।

द्वितीय चरण में यात्रा बस्ती, सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, गोरखपुर और संतकबीरनगर पहुंची जबकि तृतीय चरण की यात्रा बाराबंकी से शुरू होकर अंबेडकरनगर, सुल्तानपुर, अमेठी, प्रतापगढ़ होकर रायबरेली पहुंची।

जनादेश यात्रा का खासा जोर

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में 2022 में समाजवादी सरकार बनाने के लिए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री इन्द्रजीत सरोज के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में 'जनादेश यात्रा' निकली। 1 सितंबर को 2021 को पीलीभीत से शुरू हुई इस यात्रा

का खासा प्रभाव रहा है। लोगों के बीच इसे लेकर काफी उत्साह रहा। 2022 में सूबे की खुशहाली और तरक्की के लिये जनता श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिये तैयार है। जनादेश यात्रा में इन्हीं उद्देश्यों के साथ जनसंवाद किया गया।

यात्रा के दौरान अपने संबोधनों में श्री इन्द्रजीत सरोज ने कहा कि कैसे उत्तर प्रदेश में भाजपा की दोषपूर्ण नीतियों से जनता बेहाल है। दलितों-पिछड़ों के संवैधानिक अधिकारों की कमजोर किया जा रहा है। भाजपा सरकार लोकतंत्र की हत्या करने पर उतारू है। बेरोजगारी की समस्या से नौजवानों का भविष्य अंधकारमय हो गया है। किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं महिला उत्पीड़न और बलात्कार की घटनाओं से यूपी की छवि खराब हो रही है।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव इंद्रजीत सरोज ने अपने संबोधनों में कहा कि भाजपा लोकतंत्र का गला घोंट रही है। कांग्रेस और भाजपा दोनों एक जैसी है दोनों पिछड़ा, दलित और सामाजिक न्याय की विरोधी है, इसलिये मैंने बाबा साहेब अंबेडकर व डॉ लोहिया के सपनो को पूरा करने के लिए सपा प्रमुख श्री अखिलेश यादव जी के साथ रहने का फैसला लिया। श्री सरोज ने कहा कि सभी लोग आगामी चुनाव में समाजवादी पार्टी को एकजुट होकर वोट करें।

उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार लगातार संविधान विरोधी कार्य कर रही है। आज प्रदेश में दलित, पिछड़े, किसान, मजदूर भाजपा की जनविरोधी नीतियों से त्रस्त है। गरीबों के साथ अन्याय हो रहा है। जनता 2022 में इस जनविरोधी सरकार से अपमान का वोट के माध्यम से बदला लेगी क्योंकि भाजपा सरकार से हर वर्ग त्रस्त है। जनता बदलाव के लिए तैयार है। भाजपा ने झूठे वादे करके हर वर्ग को ठगने का काम किया है। भाजपा की नाकामियों और झूठ से जनता में आक्रोश है। जनता का भरोसा समाजवादी पार्टी और श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व पर है। श्री अखिलेश यादव ने प्रदेश के विकास के रास्ते पर ले जाने का काम

जनादेश यात्रा
समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव
मा. इन्द्रजीत सरोज (पूर्व मंत्री)

किया। भाजपा ने विकास रोका है।

उन्होंने कहा कि 2022 के विधानसभा चुनाव में जनता भाजपा को सत्ता से बाहर का रास्ता दिखाएगी। भाजपा से जनता ऊब गयी है। भाजपा सरकार में मंहगाई बढ़ी है। नोटबंदी और जीएसटी से देश बर्बाद हो गया। व्यापार तबाह हो गया। विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनेगी। प्रदेश का विकास श्री अखिलेश यादव की सरकार में हुआ। अखिलेश यादव जी ने गरीबों, किसानों, महिलाओं के लिए बहुत योजनाएं चलायी।

श्री इन्द्रजीत सरोज के नेतृत्व में जनादेश यात्रा की पीलीभीत से शुरू होकर शाहजहांपुर, बहराइच-श्रावस्ती, बलरामपुर-गोण्डा, सोनभद्र, मिर्जापुर, भदोही, प्रयागराज, फतेहपुर, प्रतापगढ़, जौनपुर, वाराणसी, गाजीपुर, चंदौली, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, हरदोई, उन्नाव, रायबरेली, अमेठी होते हुए सुल्तानपुर पहुंची जहां उसका समापन हुआ ।

आधी आबादी को समाजवादी सरकार का इंतजार

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती जूही सिंह के नेतृत्व में जन संवाद कार्यक्रम के प्रति प्रदेश की महिलाओं में खासा उत्साह देखा गया। इसका पहला चरण उत्तर प्रदेश के गोण्डा, बाराबंकी, मोहनलालगंज, बछरावां में सम्पन्न हुआ।

भाजपा सरकार की महिला विरोधी नीतियों, बलात्कार, उत्पीड़न के खिलाफ समाजवादी महिला सभा जन जागरूकता अभियान चला रही है।

2022 में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनाने के लिये समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष ने आधी आबादी को समाजवादी पार्टी से जोड़ने के लिये चौपालों, गोष्ठियों और सम्मेलनों को सम्बोधित किया।

जन संवाद कार्यक्रम के दूसरे चरण में समाजवादी महिला सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष जूही सिंह का गोरखपुर में सहजनवां, घघसहरा और नौगढ़ चौराहे पर कार्यकर्ताओं, नेताओं ने स्वागत किया। जिला कार्यालय पर पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को उन्होंने सम्बोधित किया।

इस अवसर पर उनके द्वारा बाढ़ आपदा के दौरान नाव से स्कूल जाने वाली साहसी

छात्रा संध्या निषाद को सम्मानित किया गया। जूही सिंह जी ने कहा कि भाजपा सरकार का चरित्र महिला विरोधी है। महिला उत्पीड़न, बलात्कार, हिंसा को रोकने में भाजपा सरकार पूरी तरह फेल है। बढ़ती मंहगाई से आधी आबादी पर बुरा असर पड़ा है। महिलाओं को सम्मान ओर प्रतिनिधित्व दिलाने में जो नीतिगत फैसले समाजवादी पार्टी में लिये गए थे उसे भाजपा सरकार ने रद्द कर दिया। उन्होंने कहा कि सन् 2022 में श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनने पर ही महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

जन संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत कुशीनगर में आयोजित जनसभाओं को सम्बोधित करते हुए श्रीमती सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश की महिलाएं भाजपा की दोषपूर्ण नीतियों से परिचित हो गई हैं। अपमान और शर्मसार घटनाओं की शिकार आधी आबादी भाजपा को सबक सिखाने के लिये तैयार है। 2022 में उत्तर प्रदेश में परिवर्तन तय है। जनता श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए संकल्पित है। महात्मा बुद्ध महापरिनिर्वाण स्थल के महंत श्री ज्ञानेश्वर जी से भेंट करने के क्रम में महंत जी ने 2022 में श्री अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री बनने का आशीर्वाद दिया।

मल्लाह समाज का लक्ष्य अखिलेश जी को बनाएंगे सीएम

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव के निर्देश पर पूर्व मंत्री श्री रामकिशोर बिंद के कुशल नेतृत्व में व सुभाष बंधू के संचालन में बिंद, निषाद, केवट, मल्लाह चौपाल याला ने अपना पहला चरण 22 सितंबर को बलिया के बांसडीह में संपन्न किया। इस अवसर पर चौपाल का आयोजन हुआ। उपस्थित जनता ने संकल्प लिया कि 2022 के चुनाव में साइकिल निशान पर ही बटन दबाएंगे और श्री अखिलेश यादव को फिर मुख्यमंत्री बनाएंगे।

बिंद बाहुल्य ग्राम पंचायत- कोलकला में बिंद, निषाद समाज की चौपाल में श्री राम किशोर बिंद ने कहा कि बिंद निषाद सहित 17 अति पिछड़ी जातियों को अनुसूचित जाति का आरक्षण सपा सरकार में राज्य स्तर पर लागू किया था लेकिन भाजपा सरकार ने रोक दिया। उन्होंने कहा कि आरक्षण एक संवैधानिक अधिकार है जिसे भाजपा समाप्त करना चाहती है।

उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी निषाद, बिंद, केवट सहित 17 जातियों को पहले से ही अनुसूचित जाति में शामिल करने की लड़ाई लड़ रही है। समाजवादी पार्टी ने मल्लाह, निषाद, बिंद, केवट, कश्यप के सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को महसूस किया है। श्रीमती फूलन देवी जैसी विभूति की लड़ाई को समाजवाद की लड़ाई

समझकर सबसे पहले संसद तक पहुंचाने वाली समाजवादी पार्टी ही है। नदी, पोखर, तालाब पर मल्लाह का एकाधिकार होना चाहिए।

चौपाल में बलिया जिलाध्यक्ष श्री राजमंगल यादव, जिला महासचिव राजन कनौजिया, श्री रमेशचंद साहनी, विधान सभा अध्यक्ष श्री हरेंद्र सिंह, जगमोहन बिंद, जयराम बिंद, रामजीत बिंद, लल्लन यादव, जयराम बिंद, चंद्रमा बिंद, विश्वनाथ बिंद, जनक बिंद आदि सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

इससे पहले 21 सितंबर को यात्रा बलिया पहुंची तो उसका जोरदार स्वागत हुआ। विधानसभा सदर बलिया में बिंद निषाद बाहुल्य ग्राम पंचायत भीखपुर में चौपाल का आयोजन हुआ। जिसमें बड़ी संख्या में बिंद निषाद समाज के लोगों ने कहा कि हम सब को बहका दिया गया था लेकिन अब हम जागरूक हो गए हैं अब कोई भाजपा का नेता हमें गुमराह नहीं कर सकता। 'हम सब अब ठान चुके हैं, श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री मान चुके हैं', 'मिट गया क्लेश, अब 22 में अखिलेश' नारे के साथ जन चौपाल में बिंद निषाद समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

इसके पूर्व यह यात्रा जमुनापार प्रयागराज से शुरू होकर गंगा पार प्रयागराज, जौनपुर, भदोही, मिर्जापुर, चंदौली, वाराणसी होते गाजीपुर तक गई। जहां भी यात्रा पहुंची वहां 2022 में श्री अखिलेश यादव को मुख्यमंत्री बनाने के लिए बिंद समाज को एकजुट करने का संकल्प लिया गया।

अधिवक्ताओं की यात्रा में संविधान बचाने का संकल्प

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी अधिवक्ता सभा उत्तर प्रदेश की ओर से प्रदेश में ध्वस्त कानून-व्यवस्था, और उससे उपजे संवैधानिक संकट के प्रति जनता को जागरूक करने के लिये 'संविधान बचाओ-संकल्प यात्रा' 31 अगस्त को लखनऊ से शुरू हुई। इस यात्रा के माध्यम से अधिवक्ता समाज को संगठित करने के साथ 2022 के चुनावों में प्रचंड बहुमत के साथ श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में समाजवादी सरकार बनाने का संकल्प भी लिया जा रहा है।

अधिवक्ताओं की यात्रा जहां भी पहुंची वहां अधिवक्ता समाज के साथ ही आम लोगों ने भी गर्मजोशी से स्वागत किया। अधिवक्ताओं ने कहा कि उनके पेशे की सहूलियत के लिए सिर्फ समाजवादी सरकारों में ही काम हुआ। यह समाज 2022 में भी समाजवादी सरकार बनाने को कृत संकल्प है।

समाजवादी अधिवक्ता सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार एडवोकेट के नेतृत्व में निकली यात्रा पहले चरण में लखनऊ से शुरू होकर शाहजहांपुर, बरेली,रामपुर, मुरादाबाद, बिजनौर, अमरोहा, सम्भल, सहारनपुर, शामली, कैराना, मुजफ्फरनगर, बागपत और मेरठ पहुंची।

यात्रा जहां-जहां पहुंची वहां बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। जिला कार्यालय पर सैकड़ों की संख्या में अधिवक्ताओं ने भी स्वागत अभिनंदन किया। इस अवसर पर अधिवक्ताओं ने संविधान की रक्षा का संकल्प लिया।

यात्रा के दौरान अपने संबोधनों में अधिवक्ता सभा के प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रदीप कुमार ने कहा कि भाजपा सरकार सत्ता में आने के बाद से लगातार संविधान विरोधी काम कर रही है। दलितों, पिछड़ों का हक मारा जा रहा है। भाजपा लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर कर रही है। भाजपा सरकार की नीतियां और कार्य संविधान विरोधी और जनविरोधी हैं। ऐसे समय में अधिवक्ताओं की जिम्मेदारी बढ़ गयी है। अधिवक्ताओं को आगे बढ़कर गलत कार्यों का विरोध करना होगा। अधिवक्ताओं ने हमेशा अन्याय और अत्याचार का विरोध किया है।

अधिवक्ताओं ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जी के विचारों और उपलब्धियों को जन -जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया। यात्रा को लेकर अधिवक्ताओं में काफी उत्साह दिखा। अधिवक्ताओं ने कहा कि नेताजी श्री मुलायम सिंह यादव ने जिस तरह से संविधान की रक्षा करते हुए अपना सर्वस्व दांव पर लगा दिया था, उसी प्रकार से राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव भी निडरता और साहस से संविधान को और मजबूती से बचाने का काम कर रहे हैं।

सभी ने 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाने का संकल्प किया। इसके लिए अधिवक्ता बूथ तहसील और हर जिले में जाकर भाजपा को हटाने का आह्वान करेंगे।

यात्रा का दूसरा चरण 13 सितंबर को कन्नौज से शुरू होकर बदायूं, कासगंज, हाथरस, अलीगढ़, बुलन्दशहर, हापुड़, गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर मथुरा, आगरा, फिरोजाबाद होकर 18 सितंबर को मैनपुरी, इटावा होते हुए औरैया में संपन्न हुआ।

उत्तराखंड: सभी सीटों पर लड़ेगी सपा

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी उत्तराखंड की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक 5 सितंबर को उत्तराखंड के उधमसिंह नगर जिले के रुद्रपुर में सम्पन्न हुई। समाजवादी पार्टी उत्तराखंड प्रभारी पूर्व कैबिनेट मंत्री, मुख्य प्रवक्ता श्री राजेन्द्र चौधरी ने डा॰ राममनोहर लोहिया के चित्र पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्ज्वलन कर बैठक की शुरुआत की।

उत्तराखंड प्रदेश कार्य समिति के पदाधिकारियों को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र चौधरी ने कहा कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का स्पष्ट लक्ष्य है कि 2022 के विधानसभा चुनाव में सपा उत्तराखंड की सभी 70 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। चुनाव की तैयारी चल रही है, प्रत्याशियों के आवेदन लिए जा रहे हैं। प्रत्याशी का अंतिम निर्णय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव करेंगे। उत्तराखंड में समाजवादी पार्टी जनता के सामने विकल्प बने इस दिशा में प्रयास हो रहा है। संगठनात्मक और बूथ स्तर पर सपा

की मजबूती के लिए प्रदेश के विभिन्न जिलों में राजनीतिक कार्यक्रम लगातार चल रहे हैं। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में दो दशकों की राज्य सरकारों ने जन आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य नहीं किया है। निर्वाचित सरकारों ने जनता में निराशा पैदा की है। उत्तराखंड का विकास ठप है। पलायन का स्थाई समाधान नही हो रहा है। प्रदेश में गरीबी बढ़ती जा रही है। किसान-छोटे व्यापारी त्रस्त हैं। प्रदेश सरकार द्वारा नौकरी और रोजगार सृजन के दावे हवा हवाई साबित हो रहे हैं। सिर्फ विज्ञापनों से भ्रम फैलाया जा रहा है। पांच साल में भाजपा के तीन मुख्यमंत्री बन चुके। वे सरकार चलाने में असफल हैं।

श्री चौधरी ने उत्तराखंड वासियों को भरोसा दिलाया कि उत्तराखंड राज्य निर्माण का जो सपना देखा गया था उसे पूरा करने के लिए समाजवादी पार्टी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करेगी। यूपी में पांच वर्ष के कार्यकाल में श्री अखिलेश यादव ने जैसा विकास कार्य किया वैसा केंद्र की भाजपा सरकार भी नही कर सकी। प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में उत्तराखंड में 2022 में समाजवादी सरकार बनाने और प्रदेश स्तरीय कार्यशाला कराने का प्रस्ताव पारित हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उत्तराखंड प्रदेश अध्यक्ष डॉ सत्य नारायण सचान सहित प्रमुख महासचिव शोएब अहमद, प्रदेश उपाध्यक्ष एडवोकेट सुरेश परिहार एवं अवतार सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष एस के राय, प्रदेश मुख्य प्रवक्ता सुभाष पवार, महासचिव प्रो.आर के पाठक, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष लोहिया वाहिनी चंद्रशेखर यादव, प्रमोद बिष्ट सहित अन्य प्रमुख लोगों ने प्रदेश कार्यकारिणी की बैठक को सम्बोधित किया।

जाति जनगणना

भाजपा का पाखंड उजागर

फोटो स्रोत: गूगल

अरुण कुमार त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

पूरे देश में जाति जनगणना की बढ़ती मांग के बीच केंद्र की भाजपा सरकार ने अपने पाखंडी चरित्र का प्रदर्शन करते हुए इसे कराने से पल्ला झाड़ लिया है। सुप्रीम कोर्ट में दायर एक हलफनामे में सामाजिक न्याय मंत्रालय ने कहा है कि जाति जनगणना प्रशासनिक रूप से बहुत कठिन और जटिल है।

आजादी से पहले जब भी जातियों की गिनती हुई तो डेटा की संपूर्णता और सत्यता को लेकर सवाल उठे। लगा कि पिछड़े वर्गों की जातीय गिनती प्रशासनिक रूप से जटिल है। 2011 के सोशियो इकोनॉमिक कास्ट सेंसस की नाकामी इसका सबूत है। अपनी खामियों के कारण यह हमारे लिए अनुपयोगी है और हम किसी भी काम में इसका इस्तेमाल नहीं कर सकते।

आखिरकार संघ के हिंदुत्व के विचार को केंद्र में रखकर राजनीति करने वाली पार्टी कैसे पिछड़ी जातियों की गिनती करा सकती है? वह कभी यह मानने को तैयार नहीं होती कि हिंदू समाज में जाति व्यवस्था है और ऊंच नीच इसकी विचारधारा में निहित है। इसलिए जातियों की गिनती होने से उसका पाखंड उजागर हो जाता और उसका सबका साथ और सबका विकास का खोखला दावा भी आंकड़ों के साथ सामने आता।

अब जबकि केंद्र सरकार ने जाति की जनगणना कराने से साफ मना कर दिया है तो यह बात साफ प्रकट हो गई है कि भाजपा पिछड़ों को सबसे ज्यादा बेवकूफ बनाने वाली पार्टी है जो सिर्फ नारों में ही दावा करती है "सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास' । उसे डर है कि अगर पिछड़ी जातियों की सही संख्या उजागर हो गई और यह भी सामने आ गया कि देश की बड़ी आबादी होने के बावजूद बहुत कम संसाधनों पर उनका अधिकार है तो नए किस्म की सामाजिक क्रांति शुरू होगी और भाजपा को तब सिर छुपाने की जगह नहीं मिलेगी।

यही कारण है कि सरकार ने जाति आधारित जनगणना से पल्ला झाड़ लिया है। लेकिन इसी के साथ उसने समाजवादी पार्टी और उसकी जैसी सामाजिक न्याय की दूसरी पार्टियों के लिए संघर्ष का एक मुद्दा दे दिया है। समाजवादी पार्टी को "सोशलिस्टों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ' के नारे को राष्ट्रीय स्तर पर फिर से उठाना चाहिए और वह ऐसा करेगी जरूर क्योंकि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव जाति जनगणना की मांग लोकसभा में जोर-शोर से कर चुके हैं।

हालांकि भाजपा सरकार के इस फैसले का असर देश की राजनीति पर तो पड़ेगा ही उनकी पार्टी के भीतर भी इससे खलबली जरूर मचेगी। क्योंकि उनके भीतर भी इस मामले को लेकर एक राय नहीं है। वहां इस मुद्दे पर काफी कशमकश है। निश्चित तौर पर जाति आधारित जनगणना न कराने का फैसला राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के परोक्ष निर्देश पर लिया गया लगता है लेकिन पार्टी के भीतर पिछड़ा वर्ग का नेतृत्व इस पर सहज नहीं रहेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

फोटो स्रोत: गूगल

अब जबकि केंद्र सरकार ने जाति की जनगणना कराने से साफ मना कर दिया है तो यह बात साफ प्रकट हो गई है कि भाजपा पिछड़ों को सबसे ज्यादा बेवकूफ बनाने वाली पार्टी है जो सिर्फ नारों में ही दावा करती है "सबका साथ सबका विकास और सबका विश्वास'

दावा करते हैं कि वे पिछड़ों के नेता हैं और पिछड़ों में उनकी पार्टी का वोट प्रतिशत भी निरंतर बढ़ रहा है लेकिन गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय संसद में एलान कर देते हैं कि सरकार ने नीतिगत फैसला लिया है कि 2021 की जनगणना में जाति को शामिल नहीं किया जाएगा। जाति जनगणना के सवाल पर भाजपा, संघ और उसकी सरकार की स्थिति सांप छछूंदर वाली हो गई है।

दरअसल जाति आधारित जनगणना की मांग अब चौतरफा हो गई है। सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके मिथिलेश यादव ने कहा है कि एसईसीसी पर 4,893 करोड़ रुपए खर्च हुए हैं। इसलिए इससे मिले आंकड़ों को छुपाया नहीं जाना चाहिए। खास बात यह है कि जाति जनगणना और उसके पुराने आंकड़ों को जारी करने की मांग एनडीए के बाहर और भीतर दोनों ओर से उठ रही है। एनडीए के सहयोगी दल जनता दल (यू), अपना दल और रिपब्लिकन पार्टी इसकी मांग उठा रहे हैं। समाजवादी पार्टी, राजद समेत कई विपक्षी दल लगातार इसकी मांग तेज कर रहे हैं।

जाति आधारित जनगणना इसलिए जरूरी है ताकि विभिन्न सामाजिक तबकों के विकास के लिए समुचित नीतियां तैयार की जाएं। दरअसल खतरा जाति आधारित जनगणना से नहीं बल्कि समाज की जाति आधारित

संरचना से है। जब तक यह संरचना बनी रहेगी भारतीय समाज में न तो समता आ सकती है न ही समृद्धि। जहां यह दोनों नहीं रहेंगे वहां लोकतंत्र भी ठीक से नहीं रहेगा। इस अभियान की जरूरत इसलिए भी है क्योंकि देश में आठ से दस करोड़ तक आबादी उन घुमंतू जातियों की है जो आमतौर पर गणना में शामिल ही नहीं हो पाते। वे पहले जरायम पेशा जातियां मानी जाती थीं और आज भी वंचना की शिकार हैं। इस गणना से उन्हें भी मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

इतना सब होने के बावजूद आखिर दिक्कत कहां है? दिक्कत भाजपा की गुड़ खाए गुलगुले से परहेज वाली मानसिकता में है। भाजपा ओबीसी के वोट भी चाहती है और उनके लिए अपेक्षित योजनाओं और कल्याणकारी कार्यक्रमों को ठीक से लागू भी नहीं करना चाहती। वह सोशल इंजीनियरिंग करना चाहती है लेकिन जाति तोड़ना नहीं चाहती। क्योंकि उसके दीन दयाल उपाध्याय जैसे विचारकों का मानना है कि जाति व्यवस्था हिंदू समाज के अंगों की तरह से है। जाति व्यवस्था को तोड़ना हिंदू समाज के हाथ पैर तोड़ने जैसा है।

वोट के लिए हिंदू समाज की एकता में लगी भाजपा और संघ परिवार मूलतः ब्राह्मणवादी योजना के तहत काम कर रहे हैं। इस योजना में जातिगत असमानता और भेदभाव अंतर्निहित है। उसे अगर तोड़ दिया गया तो हिंदू समाज टूट जाएगा या फिर हिंदू वोट बैंक बन नहीं पाएगा। इसलिए संघ परिवार जाति जनगणना को लेकर कशमकश में है।

कई समाजशास्त्रियों का मानना है कि संघ परिवार जाति जनगणना से इसलिए भयभीत है कि उससे उसका मूल वोट बैंक सवर्ण भयभीत है। सवर्ण इसलिए डरा है कि 15 से 20 प्रतिशत आबादी होने के बावजूद उसने 80 प्रतिशत से ज्यादा संसाधनों और सत्ता के केंद्रों पर कब्जा कर रखा है। इसीलिए कई समाजशास्त्रियों से यह प्रचार करवाया जाएगा कि अगर जाति की जनगणना की गई या पिछले आंकड़े जारी किए गए तो देश में आग लग जाएगी। यह वास्तव में एक झूठ है।

जाति आधारित जनगणना इसलिए जरूरी है ताकि विभिन्न सामाजिक तबकों के विकास के लिए समुचित नीतियां तैयार की जाएं। दरअसल खतरा जाति आधारित जनगणना से नहीं बल्कि समाज की जाति आधारित संरचना से है

अगर देश में जाति व्यवस्था से फैले जातिवाद और कट्टरता से निर्मित सांप्रदायिक विष से आग नहीं लगी तो समाज की सच्चाई जानने से आग कैसे लग जाएगी?

वास्तव में इससे खतरा यह है कि देश में धर्म और पूजा स्थलों के जो छद्म और भावनात्मक मुद्दे उठाए जा रहे हैं उससे हटकर बात वास्तविक मुद्दों पर आ जाएगी। सामाजिक और आर्थिक मामले उठेंगे तो वास्तविक मांगे भी उठेंगी। जाति व्यवस्था की सच्चाई पता चलेगी तो उसे तोड़ने की मांग भी उठेगी। समाज में नए किस्म के राजनीतिक समीकरण भी बनेंगे और इससे सांप्रदायिक और फासीवादी राजनीति कमजोर होगी क्योंकि जातियां और पिछड़ा वर्ग तो अल्पसंख्यकों में भी है। इस आंदोलन में वे भी शामिल होंगे।

यही वजह है कि इस मांग को लेकर भाजपा सरकार और संघ परिवार की स्थिति सांप छछूंदर की हो गई है। वे स्वयं तो जाति के आंकड़ों का इस्तेमाल करके पार्टी हित में अपनी रणनीति बनाते हैं लेकिन जब देश हित में बात हो रही है तो पीछे हट रहे हैं। वे कहते हैं कि यह बेहद तकनीकी काम है इसमें बहुत सारी गलतियां होंगी।

लेकिन इसका जवाब देते हुए समाजवादी पार्टी के मुखिया अखिलेश यादव महान पार्टी के सम्मेलन में कहते है कि अब सूचना प्रौद्योगिकी इतनी विकसित हो गई है कि इस काम को तीन महीने में संपन्न किया जा सकता है। विशेषकर उत्तर प्रदेश के बारे में उनका दावा है कि सत्ता में आते ही वे इस कार्य को संपन्न कराएंगे। निश्चित तौर पर यह विषय 2022 के उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न राज्यों के चुनाव में एक मुद्दा बनना चाहिए। जाहिर तौर पर इससे निकले परिणाम 2024 के चुनावों की दिशा तय करेंगे।

आरक्षण से खिलवाड़ कर रही भाजपा

बुलेटिन ब्यूरो

भाजपा के पाखंडी चरित्र को संसद में सबसे सटीक तरीके से समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने लोकसभा में व्यक्त किया। उन्होंने 10 अगस्त 2021 के भाषण में कहा, "सरकार कन्फ्यूज है। अगर देश को किसी ने सबसे ज्यादा गुमराह किया है तो वह भारतीय जनता पार्टी ने। भाजपा ने पिछड़ों दलितों को गुमराह किया है। (वह आरक्षण को खत्म करना चाहती है)। नीयत साफ हो तो आरक्षण बचेगा। जहां तक संविधान संशोधन विधेयक की बात है तो मैं दो बातें साफ कर देना चाहता हूं। यह भी अच्छा है कि राज्यों को मौका मिल रहा है कि वे फैसला करें कि किन जातियों को ओबीसी में शामिल करना है। लेकिन जब तक आप आरक्षण की 50 प्रतिशत की सीमा नहीं बढ़ाएंगे तब तक क्या ओबीसी को (उसकी आबादी के मुताबिक) पूरा आरक्षण मिल पाएगा। आप एक ही कमरे में न जाने कितने लोगों को बिठाना चाहते हैं। (एक ओर) कहते हैं कि लोकसभा छोटी पड़ रही है इसलिए एक सेंट्रल विस्टा बनाना पड़ेगा ताकि सब लोग बैठ सकें। आप अपनी सहूलियत के लिए तो सेंट्रल विस्टा बना रहे हैं लेकिन आरक्षण जो मंडल की सबसे मूल भावना है उससे खिलवाड़ कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि जातीय जनगणना हो। हम जानते हैं कि जातियों के बीच अगर कोई सबसे ज्यादा नफरत फैलाता है तो वे भाजपा के लोग हैं। मुझे याद है चुनाव। इन्होंने ओबीसी चेहरे को आगे कर दिया और कहा कि ये ओबीसी मुख्यमंत्री होंगे। लेकिन जब मुख्यमंत्री बना तब कौन? ये हर दल के अंदर नफरत पैदा करते हैं। यह सबसे पुरानी मांग रही है कि जातियों को गिना जाए। हर जाति कहती है कि हम आबादी में ज्यादा हैं। हर जाति को एक दूसरे से कन्फ्यूजन पैदा कर रखा है। आप ज्यादा हैं जाति में आपका हक छिन रहा है। अगर आप जाति जनगणना नहीं करेंगे तो समाजवादी पार्टी यूपी में जाति जनगणना करके दिखा देगी। हम लोग तो लंबे समय से नारा लगाते रहे हैं कि `सोशलिस्टों ने बांधी गांठ पिछड़ा पावै सौ में साठ'। इसलिए आप यह न भूलो कि आप को वहां बैठने का मौका पिछड़ों ने ही दिया है। जिस दिन पिछड़े हट जाएंगे, दलित हट जाएंगे उस दिन आप का पता नहीं चलेगा कि आप कहां गए। इसलिए हमारी दो मांगें हैं। एक तो आरक्षण की पचास प्रतिशत की सीमा बढ़ाई जाए और दूसरे ओबीसी की जाति जनगणना के आंकड़े जारी किए जाएं।"

लोहिया जी और हिंदी का प्रसार

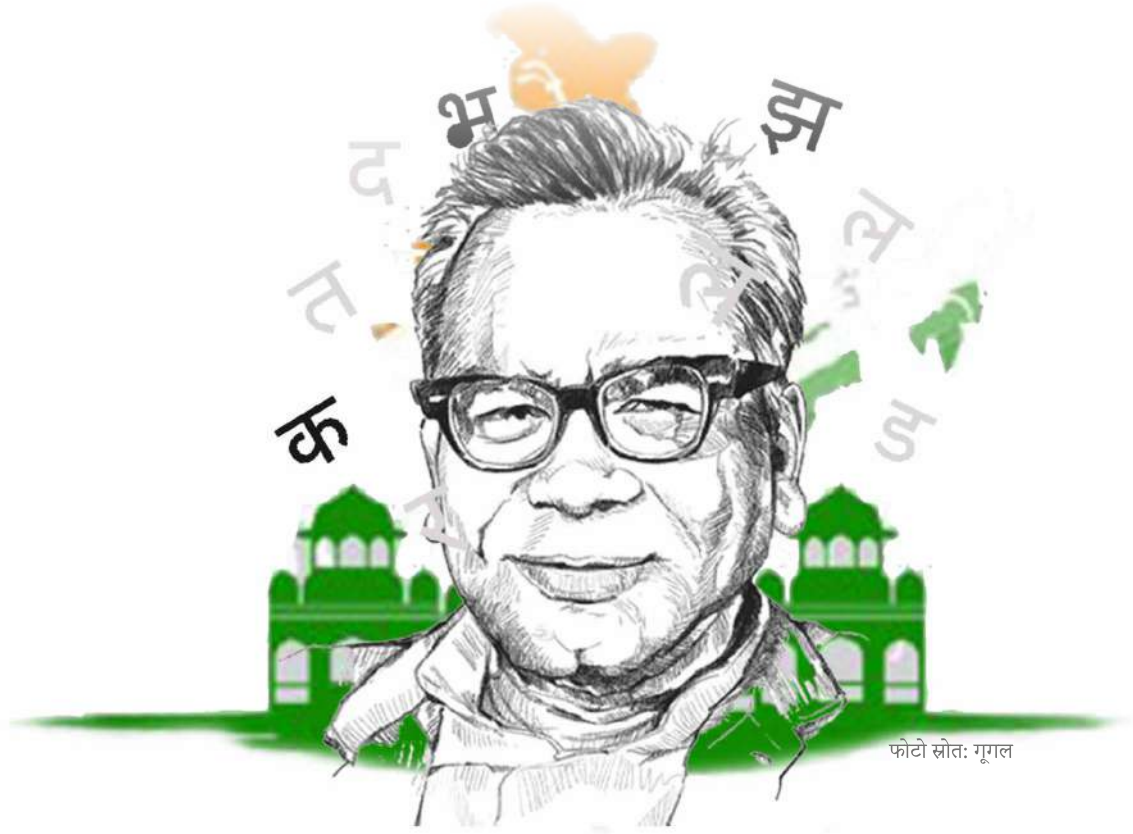

फोटो स्रोत: गूगल

"बच्चा किसके साथ अच्छी तरह से खेल सकता है, अपनी मां के साथ या पराई मां के साथ! अगर कोई आदमी किसी जबान के साथ खेलना चाहे और जबान का मजा तो तभी आता है, जब उसको बोलने वाला या लिखने वाला उसके साथ खेले, तो कौन हिंदुस्तानी है जो अंग्रेजी के साथ खेल सकता है? हिंदुस्तानी आदमी तेलुगू, हिंदी, उर्दू, बंगाली, मराठी के साथ खेल सकता है। उसमें नए-नए ढांचे बना सकता है। उसमें जान डाल सकता है, रंग ला सकता है। बच्चा अपनी मां के साथ जितनी अच्छी तरह से खेल सकता है, दूसरे की मां के साथ उतनी अच्छी तरह से नहीं

- डा. राममनोहर लोहिया

रविकान्त

सहायक प्रोफेसर, हिन्दी, लखनऊ विवि

उग्र हिंदुत्व की राजनीति करने वाले शुद्ध हिंदी में संबोधन देते हैं, हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा क्यों नहीं बन सकी, गाहे-बगाहे यह सवाल भी दागते रहते हैं; लेकिन सरकारी कार्यालयों से लेकर शिक्षण संस्थानों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए उनके प्रयास सिफर हैं। दरअसल, उनके लिए हिंदू धर्म की तरह ही हिंदी भाषा की अस्मिता भी राजनीतिक प्रोपेगेंडा मात्र है। वास्तविकता यह है कि ये हुक्मरान हिंदी भाषा के प्रति न ईमानदार हैं और न वफादार।

14 सितंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा बनाया गया लेकिन इसमें एक शर्त जोड़ दी गई कि अगले 15 साल तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा। तर्क यह दिया गया कि इस दौरान हिंदी को समुन्नत बनाकर 26 जनवरी 1965 को अंग्रेजी के स्थान पर पूर्ण रूप से लागू कर दिया जाएगा। इतिहास गवाह है कि यह तारीख आज तक नहीं आई।

1960 के दशक में बंगाल और दक्षिणी प्रांतों खासकर तमिलनाडु में हिंदी विरोधी आंदोलन हुए। नतीजे में 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित करके अंग्रेजी को सह राजभाषा का दर्जा दे दिया गया और यह प्रावधान किया गया कि गैर हिंदी भाषी प्रांतों की जब तक सहमति नहीं होती है, राजभाषा

प्रतिवर्ष 14 सितंबर को सरकारी दफ्तरों, निकायों और महकमों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। एक रस्मी उत्सव की तरह हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए संकल्प दोहराए जाते हैं लेकिन अगले दिन से सब पुराने ढर्रे पर लौट आते हैं

हिंदी को लागू नहीं किया जाएगा। यह व्यवस्था आज भी जारी है।

1976 के राजभाषा अधिनियम द्वारा भाषिक आधार पर भारत को क, ख, ग, तीन क्षेत्रों में विभाजित करके सरकारी कामकाज चल रहा है। दरअसल, अंग्रेजी का प्रयोग अनवरत जारी है। हिंदी की स्थिति अभी भी, प्रसिद्ध हिंदी कवि रघुवीर सहाय के शब्दों में 'दुहाजू की बीवी' की तरह है।

प्रतिवर्ष 14 सितंबर को सरकारी दफ्तरों, निकायों और महकमों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। एक रस्मी उत्सव की तरह हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए संकल्प दोहराए जाते हैं लेकिन अगले दिन से सब पुराने ढर्रे पर लौट आते हैं। सवाल उठता है कि हिंदी के प्रयोग में सफलता क्यों नहीं मिली? गैर-हिंदी भाषी प्रांतों में हिंदी को स्वीकार्यता क्यों नहीं प्राप्त हुई? राजभाषा हिंदी को लागू करने में सरकारी ढुलमुलपन का विरोध करते हुए समाजवादी डॉ राम मनोहर लोहिया ने सार्थक हस्तक्षेप किया। डॉक्टर लोहिया ने मुखरता से राजकाज की भाषा के रूप में अंग्रेजी के प्रयोग पर कड़ी आपत्ति की।

इस वजह से आम तौर पर माना जाता है कि लोहिया अंग्रेजी के विरोधी थे। सच्चाई यह है कि लोहिया अंग्रेजी के विरोधी नहीं बल्कि हिंदी के समर्थक हैं। दरअसल, अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में डॉक्टर लोहिया किसी भाषा के विरोधी नहीं थे। वे हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं के भी उतने ही समर्थक थे। लोहिया अंग्रेजी भाषा के खिलाफ नहीं थे, बल्कि उसकी मानसिकता और सामंती स्वभाव के विरोधी थे।

'सामंती भाषा बनाम लोक भाषा' निबंध में लोहिया ने लिखा है, "अंग्रेजी हिंदुस्तान को ज्यादा नुकसान इसलिए नहीं पहुंचा रही है

कि वह विदेशी है बल्कि इसलिए कि भारतीय प्रसंग में वह सामंती है। आबादी का सिर्फ एक प्रतिशत छोटा सा अल्पमत ही अंग्रेजी में ऐसी योग्यता हासिल कर पाता है कि वह उसे सत्ता या स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करता है। इस छोटे से अल्पमत के हाथ में विशाल जनसमुदाय पर अधिकार और शोषण करने का हथियार है।"

डॉ लोहिया ने हिंदी विरोधी आंदोलन को भी बहुत बारीकी से परखा। उनका स्पष्ट मानना है कि तटीय प्रदेशों में हिंदी का विरोध संपन्न वर्ग द्वारा किया गया। इस तबके ने तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम आदि भाषाओं को बढ़ाने और उनका समर्थन करने के बजाय हिंदी का विरोध करते हुए अंग्रेजी की वकालत की। दरअसल यह वर्ग मेहनतकश कमजोर वर्गों को यथास्थिति में रखने के लिए और अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए अंग्रेजी का समर्थन करता है। वस्तुतः हिंदी का विरोध भाषाई अस्मिता की राजनीति के जरिए अंग्रेजी पढ़े लिखे संपन्न वर्ग के हितों के संरक्षण और उनके वर्चस्व को कायम रखने के लिए किया गया।

सरकारी कामकाज और देश स्तरीय परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता से हाशिए के तबकों को न तो न्याय मिल सकता है और न ही सही अर्थ में जनतंत्र स्थापित हो सकता है। लोहिया ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है, "लोकभाषा के बिना लोकराज असंभव है। कुछ लोग यह गलत सोचते हैं कि उनके बच्चों को मौका मिलने पर वह अंग्रेजी में उच्च वर्ग जैसी ही योग्यता हासिल कर सकते हैं। सौ में एक की बात अलग है, पर यह असंभव है। उच्च वर्ग अपने घरों में अंग्रेजी का वातावरण बना सकते हैं और पीढ़ियों से बनाते आ रहे हैं। विदेशी भाषाओं के अध्ययन में जनता इन पुश्तैनी गुलामों का मुकाबला नहीं कर सकती।"

जब हिंदी की जगह अंग्रेजी को राजभाषा पद पर बिठाया गया, तब यह तर्क दिया गया कि हिंदी समृद्ध नहीं है। उसके पास पारिभाषिक शब्दावली की कमी है। यही तर्क देशी भाषाओं के लिए दिया गया और पूरे देश में विदेशी अंग्रेजी भाषा को थोप दिया गया। यह बात सही है कि अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली की कमी है। लेकिन तमाम भारतीय भाषाओं के पास अंग्रेजी की अपेक्षा दो गुना शब्द भंडार है। हिंदी का प्रयोग करने और नई शब्दावली के निर्माण से इस कमजोरी को दूर किया जा सकता है।

यह बात सही है कि अंग्रेजी के मुकाबले हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली की कमी है। लेकिन तमाम भारतीय भाषाओं के पास अंग्रेजी की अपेक्षा दो गुना शब्द भंडार है

लोहिया ने 'देशी भाषाएं बनाम अंग्रेजी' निबंध में लिखा, "जो लोग कहते हैं कि तेलुगू, हिंदी, उर्दू, मराठी गरीब भाषाएं हैं और आधुनिक दुनिया के लायक नहीं हैं उनको तो और इन भाषाओं के इस्तेमाल की बात सोचनी चाहिए, क्योंकि इस्तेमाल करते-करते ही भाषाएं धनी बनेंगी। जब मैं कभी इस तर्क को सुनता हूं,हिंदुस्तान में, तो बहुत आश्चर्य होता है कि मामूली बुद्धि के लोग भी कैसे इस बात को कह सकते हैं कि अंग्रेजी का इस्तेमाल करो क्योंकि तुम्हारी भाषाएं गरीब हैं। अगर अंग्रेजी का इस्तेमाल करते रह जाओगे तो तुम्हारी अपनी भाषाएं कभी धनी बन ही नहीं पाएंगी।"

इसके लिए समय की नहीं बल्कि इच्छाशक्ति की जरूरत है। हिंदी का प्रयोग कैसे होगा? हमारी भाषा नीति क्या होनी चाहिए? डा. लोहिया ने अपना दृष्टिकोण पेश करते हुए लिखा है कि , "केंद्रीय सरकार की भाषा हिंदी होनी चाहिए। ठीक इसके बाद दस वर्ष के लिए दिल्ली केंद्रीय सरकार की गजटी नौकरियां गैर हिंदी लोगों के लिए सुरक्षित रहें। केंद्र का राज्यों से व्यवहार हिंदी में हो और जब तक कि वे हिंदी जान लें, केंद्र को अपनी भाषाओं में लिखें।

स्नातक तक की पढ़ाई का माध्यम अपनी मातृभाषा हो और उसके बाद का हिंदी। जिला जज व मजिस्टर अपनी भाषाओं में कार्यवाही कर सकते हैं, उच्च तथा सर्वोच्च न्यायालय में हिंदुस्तानी होनी चाहिए। जबकि लोकसभा में साधारणतः भाषण हिंदुस्तानी में हों लेकिन जो हिंदी ना जानते हों, वे अपनी भाषा में बोलें।" हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग संबंधी डा. लोहिया के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है। लोहिया के रास्ते भाषा के मुद्दे को हल ही नहीं किया जा सकता है बल्कि राष्ट्रीयता को भी मजबूत किया जा सकता है।

सपा में शामिल होने का सिलसिला जारी

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी में विभिन्न दलों के नेताओं के शामिल होने का सिलसिला लगातार जारी है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में भरोसा करते हुये समाजवादी प्रदेश कार्यालय में सैकड़ों लोग लगातार समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं।

इसके तहत समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव के समक्ष समाजवादी नीतियों के प्रति आस्था जताते हुए 28 अगस्त को बसपा छोड़कर पूर्वमंत्री श्री अम्बिका चौधरी एवं श्री सिबतुल्लाह अंसारी पूर्व विधायक, मोहम्मदाबाद, गाजीपुर, जिला पंचायत बलिया के अध्यक्ष श्री आनंद चौधरी अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ समाजवादी पार्टी में शामिल हुए। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्य सुश्री ममता खंडेलवाल ने भी सपा की सदस्यता ग्रहण की।

श्री अम्बिका चौधरी के साथ आजमगढ़ मंडल के चीफ जोनल कोआर्डिनेटर श्री विनायक मौर्य, दिनेश यादव जिला उपाध्यक्ष

बसपा बलिया, श्री शिव नारायण यादव पूर्व अध्यक्ष विधानसभा फेफना, ग्राम प्रधान प्रभुनाथ राजभर, राजेन्द्र यादव अध्यक्ष वामसेफ फेफना तथा कई पूर्व प्रधान, पूर्व सदस्य जिला पंचायत भी समाजवादी पार्टी के सदस्य बने।

अध्यक्ष जिला पंचायत बलिया श्री आनंद चौधरी के साथ सर्वश्री अभय नारायण गिरि, राजीव यादव सदस्य जिला पंचायत तथा अन्य प्रतिनिधि सदस्य जिला पंचायत भी सपा में शामिल हुए हैं। सिकंदरपुर बलिया के श्री राज नारायण यादव भी बसपा छोड़कर सपा में शामिल हो गए।

पूर्व विधायक, मोहम्मदाबाद, गाजीपुर श्री सिबतुल्लाह अंसारी के साथ श्री सुेहब अंसारी, श्री सलमान अंसारी तथा श्री रेयाज अहमद अंसारी सहित बड़ी संख्या में ग्राम प्रधान, पूर्व ग्राम प्रधान, पूर्व ब्लाक प्रमुख, जिला पंचायत सदस्य, क्षेत्र पंचायत सदस्य, सभासद, समाजसेवी भी आज समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए।

2 सितंबर को पूर्व एमएलसी श्री राकेश सिंह राणा (हाथरस), पूर्व मंत्री श्री विनोद तेजयान (सहारनपुर), बसपा छोड़कर सर्वश्री संजीव त्यागी (बुलन्दशहर), पूर्व प्रमुख चौधरी साहब सिंह एवं सुरेश कुमार (सहारनपुर), भाजपा छोड़कर पूर्व प्रमुख श्री जयपाल सिंह (सहारनपुर), श्री धीरेन्द्र वीर सिंह पुत्र श्री राजवीर सिंह पूर्व सांसद आंवला बरेली, मुन्ना लाल (बुलन्द शहर), हुसैन अली एवं विनय शर्मा (बुलन्दशहर), कांग्रेस छोड़कर अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ समाजवादी पार्टी में शामिल हुये।

पूर्व मंत्री स्वर्गीय कुंवर विवेक सिंह की पत्नी श्रीमती मंजुला विवेक सिंह ने अपने सहयोगियों सर्वश्री ईशान सिंह, यशोवर्धन सिंह, खुर्शीद अहमद खान, राजेश सिंह गौतम, वरिष्ठ सभासद, संदीप यादव सभासद, वीरेन्द्र सिंह, महेन्द्र सिंह, विद्यानंद सिंह, पुष्पेन्द्र श्रीवास्तव, धनंजय सिंह, ताहिर खान, सुधीर सिंह सहित बांदा जनपद के अन्य तमाम लोग कांग्रेस छोड़कर समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

14 सितंबर को उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के हजारों लोगों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। लखनऊ में समाजवादी पार्टी के मुख्यालय में हुए समारोह में बिजनौर के पूर्व सांसद श्री यशवीर सिंह, पूर्व विधायक श्री शेख सुलेमान अपने साथियों के साथ सपा में शामिल हुये।

इनके अलावा कासगंज से सर्वश्री मान पाल सिंह, पूर्व मंत्री, मयंक यादव, महेश यादव, मोहम्मद सुल्तान अहमद, आर. एन. चौधरी, प्रो सुल्तान अहमद, प्रो आमिल

यूपी का ये जनादेश
आ रहे हैं अखिलेश
नयी हवा है ~ नयी सपा है
हाथ ~ युवा का साथ

समाजवादी पार्टी

हुसैन, गोरखपुर से सर्वश्री जीतेन्द्र निषाद, सुशील चन्द्र साहनी महराजगंज से श्री बेचन निषाद, आर.के. मिश्रा, गोण्डा से सर्वश्री अब्दुल कलाम मलिक, अब्दुल हफीज मलिक, अब्दुल लतीफ मलिक, मंजूर मलिक, सहारनपुर से अब्दुल वाहिद, फर्रूखाबाद से श्री जितेन्द्र कटियार, आदित्य सिंह राठौर, मनोज मिश्रा सहित अन्य कासगंज से श्री राकेश बाबू बाल्मीकि प्रदेश महामंत्री सफाई मजदूर संघ, बसपा के पूर्व लोकसभा प्रत्याशी नूर मोहम्मद खान एटा, नेम सिंह लोधी सपा में शामिल हुए।

कुशीनगर से श्री हरिशंकर राजभर एवं श्री मुन्ना यादव अपने सहयोगियों के साथ सपा के सदस्य बने। सिद्धार्थ नगर से पूर्व विधायक श्री अनिल सिंह कांग्रेस छोड़कर अपने सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ समाजवादी पार्टी के सदस्य बने।

16 सितंबर को बड़ी संख्या में बसपा, कांग्रेस, भाजपा तथा सामाजिक संगठनों के प्रमुख लोगों ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इनमें सेवानिवृत्त आयकर आयुक्त श्री सुवचन राम, पूर्व विधायक श्री भगेलू राम, डा॰ आजम मीर खां, वरुण गिहार, अबरार अहमद तथा बाबा शाह नवाज श्रावस्ती दरगाह पीर हनीफ आदि प्रमुख थे।

इनके अलावा सुल्तानपुर की श्रीमती नर्गिस नायाब पत्नी मोहम्मद रिजवान पूर्व बसपा प्रत्याशी इसौली, जिला पंचायत सदस्य सर्वश्री मोहम्मद आसिफा खान, मोहम्मद सईद, मोहम्मद जफर खान सहित प्रधान हाजी पट्टी श्री मोहम्मद अख्तर, सहित कई लोग समाजवादी पार्टी के सदस्य बने।

कांग्रेस के प्रदेश उपाध्यक्ष (अनुसूचित जाति सेल) श्री सुरेन्द्र सिंह गौतम, श्रीमती कहकशां फिरोज अध्यक्षा नगर पंचायत तुलसीपुर बलरामपुर, फिरोज खां पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष, बसपा के बद्री प्रसाद चौधरी, भाजपा के कृष्ण कुमार गिहार तथा वरूण गिहार राष्ट्रीय अध्यक्ष गिहार समाज, जिला पंचायत सदस्य सलमान रजा तथा अन्य उलेमा कौंसिल, वरिष्ठ एडवोकेट, रिटायर्ड अफसर एवं समाजसेवी बड़ी संख्या में सपा में शामिल हो गए।

जिला पंचायत सहारनपुर की सदस्य श्रीमती ममता चौधरी, मौलाना मोहम्मद असलम वारसी ने भी अपने साथियों के साथ समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

उधर भोजपुरी के सुप्रसिद्ध गायक एवं अभिनेता श्री समर सिंह को प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने समाजवादी पार्टी की सदस्यता ग्रहण कराई।

नाकारा सरकार बेकाबू बुखार

फोटो स्रोत: गूगल

बुलेटिन ब्यूरो

उत्तर प्रदेश में डेंगू, वायरल बुखार से हाहाकार मचा हुआ है, अस्पतालों में भारी भीड़ है, समय से समुचित इलाज न मिलने से बच्चों की मौंते हो रही है, सत्तारूढ़ भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री जी इसके बावजूद 'आल इज वेल' का झूठा दावा कर रहे हैं। ध्वस्त स्वास्थ्य सेवाओं की ओर भाजपा सरकार का ध्यान नहीं है।

उत्तर प्रदेश में लचर स्वास्थ्य सेवाओं के कारण जनता बेहाल है। बारिश-जलजमाव के कारण संचारी रोग तेजी से फैल रहा है। जलजनित बीमारियों से संक्रमित रोगियों की संख्या लगातार बढ़ रही है। सरकार की ओर

भाजपा सरकार की कुनीतियों से यूपी बीमार

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा है कि भाजपा सरकार की कुनीतियों के चलते प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाएं पूरी तरह चरमरा गई हैं। भाजपा ने उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य बना दिया है।

भाजपा के साढ़े चार वर्षों में उत्तर प्रदेश की जनता को पग-पग पर परेशानियां उठानी पड़ रही हैं। भाजपा ने इस राज्य को गंदगी के ढेर में बदल दिया है। फलतः कोरोना महामारी के बाद अब चारों ओर डेंगू तथा वायरल बुखार से लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। बच्चों की मौत का सिलसिला थम नहीं रहा है। डेंगू पीड़ितों को उचित इलाज नहीं मिल रहा है। मुख्यमंत्रीजी बड़ी-बड़ी बाते करते हैं, दावे करते हैं पर हकीकत में भ्रष्ट प्रशासनिक मशीनरी अब उनकी बातों पर ध्यान नहीं देती हैं। मुख्यमंत्री जी की टीम इलेवन और टीम 9 का इन दिनों कहीं अता-पता नहीं है।

पिछली समाजवादी सरकार में उत्तर प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कार्य हुए थे। लखनऊ में कैंसर हॉस्पिटल, मातृ-शिशु रेफरल हॉस्पिटल, प्रदेश में दर्जनों मेडिकल कॉलेज की स्थापना 102-108 एम्बुलेंस सेवाओं से प्रदेशवासियों के स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए ठोस कार्य किये गये थे। असाध्य रोगों-कैंसर, लीवर, किडनी, हार्ट के मुफ्त इलाज की व्यवस्था की गई। स्वास्थ्य सेवाओं में बुनियादी ढांचा मजबूत किया गया। लेकिन भाजपा सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को ध्वस्त कर दिया है।

सच तो यह है कि भाजपा सबके साथ छल करने में उस्ताद पार्टी है। अब तक केन्द्र हो राज्य की भाजपा की डबल इंजन सरकारें हैं लेकिन उन्होंने झूठे वादों के सहारे लोगों को सिर्फ गुमराह करने का पाप किया है। भाजपा राज में महंगाई, बीमारी और भ्रष्टाचार को पूरा प्रोत्साहन मिला है। लेकिन अब जनता ऊबी हुई है, भाजपा के कारनामों की सच्चाई दीवार पर लिखी है कोई भी पढ़ सकता है। 2022 के चुनाव में भाजपा की विदाई तय है।

से संक्रमण रोकने की दिशा में कोई प्रयास नहीं हो रहा है न तो समय से दवाओं का छिड़काव हुआ और न ही इलाज की समुचित व्यवस्था।

यह स्थिति तब है जबकि महज कुछ माह पहले ही कोरोना की दूसरी लहर में खस्ताहाल स्वास्थ्य सेवाओं के कारण सैकड़ों लोगों की जान चली गई थी। तब सरकार ने बड़ी बड़ी घोषणाएं की थीं कि स्वास्थ्य सेवाओं का काया पलट कर दिया जाएगा। वे हवाई घोषणाएं थीं यह इससे ही साफ है कि भाजपा सरकार में लोगों को बुखार तक का इलाज नहीं मिल पा रहा।

कोरोना की दूसरी लहर में प्रदेश में लाशों का खेल होता रहा। मुख्यमंत्री दावा करते रहे कि तीसरी लहर आने से पहले ही सब तैयारियां कर ली गई है। वार्डों में बेड बढ़ गए है, दवांए पर्याप्त हैं परन्तु डेंगू के पहले दौर में ही स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली का आलम यह है कि गरीब आदमी न जी पा रहा है, ना मर पा रहा है। इलाज उसके लिए चांद सितारों को तोड़कर लाने जैसा हो गया है।

बुलंदशहर के जिला अस्पताल में छत टपक रही है। राजधानी के अस्पताल में सीलन दूर

फोटो स्रोत: गूगल

नहीं हो पाई है। सीतापुर में समाजवादी सरकार के समय करोड़ों रूपयों से ट्रामा सेंटर बने 5 साल बीतने को है, अभी तक चालू नहीं किया गया है।

डेंगू बुखार ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सैकड़ों मासूमों की जान ली। अब पूर्वी उत्तर प्रदेश में भी इसका प्रकोप दिखाई दे रहा है। खुद राजधानी लखनऊ के अस्पतालों से मरीजों की भीड़ सम्हाले नहीं सम्हल रही है। हालत बिगड़ने की वजह से दवाओं तक का स्टाक कम हो गया है। गम्भीर बीमार भी अस्पतालों से वापस किए जा रहे हैं। बेड न होने के बहाने से उनका प्राथमिक उपचार भी नहीं किया जा रहा है।

फिरोजाबाद, मथुरा, मैनपुरी, कानपुर, फर्रुखाबाद सहित कई जनपदों में मातम पसरा हुआ है। बच्चों को खो चुकी माताओं की चीखें विज्ञापनों के हवाई दावों से परे वह हकीकत है जिसने सैकड़ों घरों को आंसुओं के समंदर में डुबो दिया है। प्रदेश ने वह मार्मिक तस्वीरें देखीं जिनमें मथुरा में एक बीमार बच्चे का पिता अधिकारी के पैरों में गिरकर इलाज कराने की गुहार लगा रहा है। एक दिव्यांग महिला अपने दुधमुंहे बच्चे को गोदी में लिए इलाज के लिए गुहार लगा रही है जिसे अस्पताल वालों ने इलाज के बजाय बाहर खदेड़ दिया। जिला अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर बुनियादी सुविधाओं का भी अकाल है। पूरे प्रदेश में हाहाकार मचा है। जनता त्रस्त है। भाजपा सिर्फ सत्ता बचाने में व्यस्त है।

डॉ केपी यादव का निधन अपूरणीय क्षति

बुलेटिन ब्यूरो

जौनपुर के वरिष्ठ समाजवादी पार्टी नेता डॉ केपी यादव के निधन पर समाजवादी पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में शोक सभा हुई। जिसमें दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने कहा कि डॉ केपी यादव समाजवादी पार्टी के निष्ठावान एवं कर्मठ कार्यकर्ता थे। उनके निधन से सपा को अपूरणीय क्षति हुई है। डॉ केपी यादव का लखनऊ में इलाज के दौरान 31 अगस्त की सुबह निधन हो गया था।

डाॅ केपी यादव समाजवादी सरकार में गोसेवा आयोग के अध्यक्ष थे। वे दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री भी रहे। इन दिनों वे श्री अखिलेश यादव के नेतृत्व में 2022 में समाजवादी सरकार बनाने के अभियान में जुटे थे। पिछले दिनों उन्होंने यूथ आइकन का आयोजन किया था जिसमें श्री अखिलेश यादव द्वारा विविध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले युवाओं को सम्मानित किया गया था।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव 5 सितंबर को जौनपुर के धर्मापुर ब्लाक क्षेत्र के उतरगांवा स्थित स्वर्गीय डॉ. केपी यादव के घर पहुंचे एवं उनके परिजनों से मुलाकात कर ढांढस बंधाया और शोक व्यक्त किया। उन्होंने डॉ. केपी यादव यादव के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित कर उन्हें नमन किया ओर कहा कि अफसोस है कि सपा ने डॉ. केपी यादव के रूप में बड़ा नेता खो दिया है। वह पार्टी के पुराने नेता व परिवार के सदस्य थे। अचानक जब परिवार का कोई सदस्य चला जाता है तो बड़ा दुख होता है। हम सब उनके परिवार के साथ खड़े हैं। भगवान उनके परिवार को दुख सहने की क्षमता प्रदान करें।

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव ने कहा कि डॉ केपी यादव का पूरा जीवन अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करते बीता। जीवन भर वे गरीबों, किसानों, नौजवानों, विद्यार्थियों, वंचितों, सामाजिक न्याय के हक और सम्मान के लिए आवाज बुलंद करते रहे। जनहित के मुद्दों पर वे आगे बढ़कर मोर्चा संभालते थे। लोकतंत्र के प्रखर समर्थक डॉ केपी यादव ने हमेशा सत्ता के अहंकार को चुनौती दी।

एसआरएस यादव को पहली पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि

पूर्व एम.एल.सी. एवं समाजवादी पार्टी के प्रदेश सचिव रहे श्री एसआरएस यादव की प्रथम पुण्यतिथि पर 7 सितंबर को पार्टी के प्रदेश कार्यालय लखनऊ में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रदेश अध्यक्ष श्री नरेश उत्तम पटेल ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रद्धांजलि सभा में एमएलसी श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं डाॅ राजपाल कश्यप, रामशंकर यादव, विकास यादव, सिद्धार्थ सिंह, प्रदीप तिवारी, दिग्विजय सिंह 'देव' डाॅ रामकरन निर्मल, अनीस राजा, के.के. श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

ओम प्रकाश श्रीवास्तव के निधन पर शोक

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने वरिष्ठ समाजवादी नेता श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव के निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। श्री ओम प्रकाश श्रीवास्तव पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर जी के अनन्य सहयोगी एवं जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रहे थे। वे श्री मुलायम सिंह मंत्रिमंडल में 1990 में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री भी रहे थे। उन्होंने जीवन पर्यंत समाजवादी विचारधारा को आगे बढ़ाने का काम किया।

श्री अखिलेश यादव ने जौनपुर सदर के पूर्व विधायक मोहम्मद अरशद खान के पिताजी, पूर्व जिलाध्यक्ष जौनपुर श्री रवीन्द्र नाथ यादव उर्फ राय साहब एडवोकेट, टाण्डा के वरिष्ठ नेता मास्टर दयाराम यादव के निधन पर गहरा शोक जताते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की है। मास्टर दयाराम जी काफी समय से बीमार थे। 3 सितंबर को उनका स्वर्गवास हो गया। आदर्श जनता इंटर कालेज टाण्डा से सेवानिवृत्त के बाद वे राजनीति में सक्रिय हो गए थे।

सादगी की मिसाल थे भगवती सिंह

बुलेटिन ब्यूरो

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव ने 28 अगस्त को लखनऊ स्थित बख्शी का तालाब इंटर कालेज में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता पूर्व सांसद, पूर्व मंत्री श्री भगवती सिंह की प्रतिमा का अनावरण किया। इस अवसर पर अपने संबोधन में श्री अखिलेश यादव ने कहा कि भगवती सिंह जी आजीवन सादगी की मिसाल रहे।

स्वर्गीय भगवती सिंह के 8 9 वें जयंती अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री अखिलेश यादव को अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रतिमा के अनावरण कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव का समाजवादी पार्टी कार्यालय से बख्शी तालाब तक 20 किलोमीटर की दूरी में जगह-जगह भव्य स्वागत एवं अभिनंदन हुआ। हजारों की तादाद में नौजवान फूल-मालाएं लिये मुख्य अतिथि के स्वागत में खड़े रहे। श्री यादव का काफिला पहुंचने पर विभिन्न स्थलों पर पुष्प वर्षा कर श्री अखिलेश यादव जिन्दाबाद के गगनभेदी नारे लगे। आम जनता का जोश अपने नेता के लिये सड़कों पर अपार भीड़ के रूप में देखने को मिला।

व्यापारी, राहगीर, सहित समाज के विभिन्न

वर्गों के लोगों ने श्री अखिलेश यादव का स्वागत करते हुये कहा कि 2022 में सपा की भारी बहुमत से सरकार बनने पर ही उनकी समस्याओं का समाधान होगा। बेकारी दूर होगी, कानून व्यवस्था सुधरेगी, प्रदेश में विकास फिर से शुरू होगा।

अभिनंदन करते के लिये उमड़ी भीड़ में भारी संख्या में महिलायें भी उपस्थित रहीं। ऐसा लगा जैसे 20 किलोमीटर तक मानव श्रंखला बन गयी हो। गरीब महिलायें अपनी झुग्गी-झोपड़ियों से बाहर आकर भगवान से प्रार्थना कर रही थी कि श्री अखिलेश यादव के मुख्यमंत्री बनने पर ही उनके जीवन का अंधियारा दूर हो सकेगा। अधिवक्ताओं ने भी प्रतीक चिह्न देकर श्री यादव का स्वागत किया।

साफ़ और बेबाक

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

Socialist Leader of India. Chief Minister of UP (2012 - 2017)

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

शहीद वीर बहादुर सिंह जी अमर रहें।

प्रतापगढ़ के लाल शहीद वीर बहादुर सिंह जी के अंतिम संस्कार में पहुंचकर समाजवादी पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने अर्पित की श्रद्धांजलि।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

चौवन गुज़रे, छह महीने बचे इस दंभी सरकार के किसान, ग़रीब, महिला व युवा पर अत्याचार के बेरोज़गारी, महंगाई, नफ़रत व ठप्प कारोबार के बहकावे, फुसलावेवाली, जुमलेबाज़ सरकार के

नहीं चाहिए ऐसी सरकार, जिसका सच है:
ठगका साथ, ठगका विकास, ठगका विश्वास,
ठगका प्रयास

#झूठ_का_फूल

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

है भाजपा की
झूठ की मिट्टी
झूठ का बीज
झूठ का पौधा
झूठ का फूल
इस भाजपाई
झूठ का फल
न आज मिला
न मिलेगा कल

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

प्रचार में लीन भाजपा सरकार नींद से जागे और लखनऊ व प्रदेश के शहरों, बस्तियों, गाँवों में फैल रहे ख़तरनाक जानलेवा बुखार से प्रभावित होने वाले बच्चों और बड़ों के लिए स्तरीय चिकित्सा व्यवस्था सुनिश्चित करे। वायरल फ़ीवर से यूपी के बाल-बच्चों वाले परिवार बेहद चिंतित और भयभीत हैं।

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

किसानों का आक्रोश देखकर डबल इंजन के सारे ड्राइवर नदारद हो गये हैं। भाजपा में भगदड़ मच गयी है।

उप्र के मुज़फ़्फ़रनगर ने एक ऐसी 'जनक्रांति' को जन्म दिया है जो देश को भाजपा की नफ़रत भरी राजनीति के अंधकार से निकालकर अमन-चैन और तरक़्क़ी की नयी रोशनी की ओर ले जाएगी।

#भाजपा_ख़त्म

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

It was a pleasure to welcome and meet the Ambassador of France, H.E. Mr Emmanuel Lenain @FranceinIndia

#बाइस_में_बाइसकिल

Translate Tweet

Following

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

आज वरिष्ठ नेता श्री सुखदेव राजभर जी का कुशलक्षेम जानने का व्यक्तिगत सुअवसर मिला। उनको स्वस्थ एवं मंगलमय जीवन की शुभकामनाएँ! उनका अनुभव और आशीर्वाद हम सबके लिए बहुत अहम है।

#बड़ो_का_हाथ_युवा_का_साथ

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

सड़कों को गड्ढा मुक्त करनेवालों ने, सड़कों को दरियायुक्त कर दिया.

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Translate Tweet

बरसात में गोरखपुर आना तो नाव जरूर लाना

मूसलाधार बारिश में दरिया बन गया शहर, कई मोहल्लों में कमर और घुटनों तक भरा पानी, लोग परेशान

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जिस प्रकार किसान और ग्रामीण जनता आवारा पशुओं की समस्या से बुरी तरह त्रस्त है उससे तो यही लगता है कि उप्र का अगला चुनाव स्वयंभू-तथाकथित 'दमदार' बनाम 'दुमदार' की समस्या पर होगा।

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

जब-जब बुनियाद से जुड़ा कोई वापस आता है तो इमारत को और भी~और भी ऊँचा उठाता है!

#बड़ों_का_हाथ_युवा_का_साथ
#बाइस_में_बाइसिकल

Translate Tweet

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भाजपा सोच रही है कि वो प्रबुद्ध सम्मेलन करके 2022 में अपनी संभावित हार से बच जाएगी। ये भाजपा की भूल है क्योंकि सच्चे प्रबुद्ध, भाजपा की संकीर्ण राजनीतिक सोच के साथ कभी भी नहीं रहे हैं। इसके विपरीत प्रबुद्ध लोग जन-जागरण करेंगे और भाजपाइयों की नींद भी उड़ायेंगे।

#नहीं_चाहिए_भाजपा

Akhilesh Yadav
@yadavakhilesh

भविष्य है साइकिल के साथ...

बड़ों का हाथ, युवा का साथ, बच्चों का प्यार...
इस बार चार सौ पार!

#बाइस_में_बाइसिकल

Translate Tweet

पंजीकृत डाक पंजीकरण संख्या GPO/LW/NP-300/2021-2023 कुल पृष्ठ : 60 डिस्पैच तिथि : 15, 16, 17

समाजवादी पार्टी

बाइसिकल बुलंद!

#2022
आ रहे हैं
अखिलेश